Toppersnotes®
Unleash the topper in you

HCS

हरियाणा लोक सेवा आयोग

Haryana Public Service Commission

(Prelims)

सामान्य अध्ययन

पेपर – 1 || भाग – 1

आधुनिक भारत और कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

Haryana Public Service Commission

पेपर - 1 भाग - 1
आधुनिक भारत और कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	**भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन** • यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक • भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण • विदेशी शक्तियां	**1**
2.	**मुगल साम्राज्य का पतन** • विदेशी आक्रमण • उत्तर कालीन मुगल साम्राज्य • मुगल साम्राज्य के पतन के कारण	**8**
3.	**नए राज्यों का उदय** • उत्तराधिकारी राज्य • योद्धा राज्य • स्वतंत्र राज्य	**12**
4.	**भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार** • वणिकवाद • प्राच्यवाद (ओरिएण्टलिज्म) • भारत में ब्रिटिश विस्तार की विशेषताएँ • बंगाल • मैसूर • मराठा • पंजाब • सिंध • अवध • पड़ोसी देशों में ब्रिटिश विस्तार • ब्रिटिश की विस्तारवादी नीतियाँ	**14**
5.	**1857 का विद्रोह** • 1857 के विद्रोह का महत्व • 1857 के विद्रोह के कारण • प्रसार • 1857 के विद्रोह के दौरान क्षेत्रीय नेता • विद्रोह का दमन • विद्रोह से जुड़े ब्रिटिश सेना के अधिकारी • असफलता के कारण • विद्रोह का प्रभाव	**30**
6.	**1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन** • भारत सरकार अधिनियम 1858	**36**

	• भारत परिषद अधिनियम 1861 • तीन दिल्ली दरबार • सिविल सेवा में परिवर्तन • सेना में परिवर्तन • रियासतों के साथ संबंध • श्रम कानून • भारत परिषद् अधिनियम 1892	
7.	**सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन (19वीं सदी)** • कारण • प्रमुख समाज सुधारक • हिंदू सुधार आंदोलन • मुस्लिम सुधार आन्दोलन • पारसी सुधार आंदोलन • सिख सुधार आंदोलन • थियोसोफिकल मूवमेंट • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव	**39**
8.	**ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था** • ब्रिटिश भू राजस्व नीतियाँ • व्यापार एवं वाणिज्य • धन की निकासी सिद्धांत • ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक विकास • भारत में डाक प्रणाली	**51**
9.	**शिक्षा और प्रेस का विकास** • 1857 से पहले की शिक्षा • 1857 के बाद की शिक्षा • स्थानीय शिक्षा का विकास • तकनीकी शिक्षा का विकास • शिक्षा में यूरोपीय लोगों का योगदान • शिक्षा में स्वदेशी प्रयास • शिक्षा पर ब्रिटिश नीति का मूल्यांकन • प्रेस का विकास • राष्ट्रवादी और साहित्यिक विकास	**60**
10.	**ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन** • लोगों के प्रतिरोध के लिए जिम्मेदार कारक • नागरिक विद्रोह • राजनीतिक धार्मिक आंदोलन • सामंती विद्रोह • अन्य नागरिक विद्रोह • आदिवासी विद्रोह • किसान आंदोलन • प्रांतों में किसान गतिविधि	**67**
11.	**राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)** • देश का एकीकरण	**78**

	• शिक्षा और पश्चिमी विचार • प्रेस और साहित्य • स्थानीय साहित्य का विकास • भारत के अतीत की पुनर्खोज • सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन • मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों का उदय • सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियां और नस्लीय विरोध • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पहले के राजनीतिक संघ • भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना • उदारवादी चरण (1885-1905)	
12.	**उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग/ चरमपंथी चरण (1905-1909)** • चरमपंथियों के उदय के कारण • बंगाल का विभाजन • विभाजन विरोधी आंदोलन • स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन • ऑल इंडिया मुस्लिम लीग • कांग्रेस का सूरत विभाजन (1907) • सरकार की रणनीति • 1909 के मॉर्ले मिंटो सुधार / 1909 का भारतीय परिषद अधिनियम • उग्रवादी राष्ट्रवाद का विकास • क्रांतिकारी आंदोलन का पहला चरण • विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां • प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन • होम रूल लीग आंदोलन • कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916) • लखनऊ पैक्ट	**83**
13.	**जन आंदोलन : गांधीवादी युग (1917-1925)** • गांधी का प्रारंभिक जीवन • संघर्ष का मध्यम चरण (1894-1906) • निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914) • महात्मा गांधी का भारत आगमन • मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार अथवा भारत सरकार अधिनियम, 1919 • रॉलेट एक्ट (1919) • जलियांवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919) • खिलाफत आंदोलन • असहयोग / खिलाफत आंदोलन	**94**
14.	**स्वराज के लिए संघर्ष (1925 1939)** • कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी या स्वराज पार्टी • मार्क्सवादी और समाजवादी विचारों का प्रसार • 1920 के दशक के दौरान क्रांतिकारी गतिविधि का पुनरुत्थान • क्रांतिकारी गतिविधियां • साइमन कमीशन/भारतीय सांविधिक आयोग (1927) • मुस्लिम लीग के दिल्ली प्रस्ताव (1927)	**102**

	• नेहरू रिपोर्ट (1928) • जिन्ना के चौदह सूत्र • कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन (1928) • इरविन की घोषणा (31 अक्टूबर, 1929) • दिल्ली घोषणापत्र (नवंबर 1929) • कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929) • सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) • कांग्रेस का कराची अधिवेशन (1931) • गोलमेज सम्मेलन • सविनय अवज्ञा आंदोलन को फिर से शुरू करना • सांप्रदायिक पुरस्कार और पूना पैक्ट • गांधीजी और अम्बेडकर वैचारिक समानताएं और मतभेद • भारत सरकार अधिनियम, 1935 • कांग्रेस के हरिपुरा और त्रिपुरी अधिवेशन • द्वितीय विश्व युद्ध (1939) • वर्धा में सीडब्ल्यूसी (कांग्रेस वर्किंग कमिटी) की बैठक • कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन (मार्च 1940) • सुभाष चंद्र बोस • गांधी और बोस वैचारिक मतभेद	
15.	**स्वतंत्रता की ओर (1940 1947)** • मुस्लिम लीग का लाहौर प्रस्ताव (1940) • अगस्त प्रस्ताव (1940) • व्यक्तिगत सत्याग्रह (1941) • द क्रिप्स मिशन (1942) • भारत छोड़ो आंदोलन (1942) • गांधी के अनशन • 1943 का बंगाल अकाल • राजगोपालाचारी फॉर्मूला (1944) • देसाई लियाकत समझौता (1945) • वेवेल योजना (1945) • सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) • आम चुनाव (1945 46) • 1945 46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये • कैबिनेट मिशन (1946) • प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस और सांप्रदायिक दंगे • संविधान सभा का चुनाव (1946) • अंतरिम सरकार • लीग का अवरोधक दृष्टिकोण • भारत में साम्प्रदायिकता • संविधान सभा का गठन (1946) • क्लेमेंट एटली की घोषणा • माउंटबेटन योजना (3 जून 1947) • भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम	**117**

16.	**महत्वपूर्ण व्यक्ति और घटनाएँ** • गवर्नर जनरल • वायसराय • कांग्रेस के कुछ महत्वपूर्ण सत्र • क्रांतिकारी संगठन/पार्टियाँ • क्रांतिकारी घटनाएँ/मामले	**128**
	कला एवं संस्कृति	
1.	**संस्कृति** • भारतीय संस्कृति की विशेषताएं	**137**
2.	**वास्तुकला/स्थापत्य कला** • पाषाण कालीन स्थापत्य कला • सिंधुघाटी सभ्यता कालीन स्थापत्य • मंदिर वास्तुकला • स्तूप स्थापत्य • गुफा वास्तुकला • महलों और किलों की वास्तुकला • इंडो इस्लामिक वास्तुकला • मुगल स्थापत्य कला • औपनिवेशिक वास्तुकला • स्वतंत्रयोत्तर वास्तुकला • स्थापत्य विरासत का संरक्षण • यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल	**139**
3.	**मूर्तिकला और कलाकृतियाँ** • मूर्तिकला का विकास • सिंधु घाटी सभ्यता मूर्तिकला • मौर्यकालीन मूर्तिकला कला • मौर्योत्तर काल में मूर्ति कला • भारतीय मूर्तिकला के स्कूल • गुप्त कालीन मूर्ति कला • पाल और चंदेल मूर्तियां • दक्षिण भारत में मूर्तियां • भारत में महत्वपूर्ण शिलालेख	**173**
4.	**भारत में मृद्भांड** • मध्यपाषाण मृदभांड • नवपाषाण युग • सिंधु घाटी सभ्यता के मृदभांड • गैरिक मृदभांड • कृष्ण लोहित मृद्पात्र • चित्रित धूसर मृदभांड • मौर्यकालीन मृद्भांड • लाल मार्जित मृद्भांड/ रेड पोलिश्ड वेयर • तुर्क मुगल काल • ब्लू पॉटरी	**184**
5.	**भारत में सिक्के** • पंच मार्क या आहत चिह्नित सिक्के	**186**

	• इंडो यूनानी सिक्के • सातवाहन द्वारा जारी किये गये सिक्के • क्षत्रप या इंडो सीथियन • गुप्त काल के सिक्के • वर्धन राजवंश के सिक्के • चालुक्य राजाओं द्वारा जारी किए गए सिक्के • राजपूत राजवंशों द्वारा जारी किए गए सिक्के • पांडय और चोल राजवंश के सिक्के • तुर्की और दिल्ली सल्तनत के सिक्के • विजयनगर साम्राज्य के सिक्के • मुगल कालीन सिक्के	
6.	**चित्रकला** • प्रागैतिहासिक चित्रकला • प्राचीन चित्रकला / भित्ति चित्र • मध्यकालीन / लघु चित्र • चित्रकला के क्षेत्रीय स्कूल • दक्षिण भारतीय शैली • लोक चित्र कला • आधुनिक कालीन चित्रकला	**189**
7.	**धर्म** • हिंदू धर्म • जैन धर्म • बौद्ध धर्म • ईसाई धर्म • सिक्ख धर्म • यहूदी धर्म • पारसी धर्म • इस्लाम धर्म • ताओ धर्म • छः नास्तिक संप्रदाय	**202**
8.	**दर्शन** • रूढ़िवादी स्कूल • हेटेरोडोक्स स्कूल	**211**
9.	**साहित्य** • साहित्य का विकास • संस्कृत साहित्य • पाली और प्राकृत साहित्य • द्रविड़ साहित्य • क्षेत्रीय साहित्य • उर्दू साहित्य • फारसी साहित्य • हिंदी साहित्य • आधुनिक साहित्य	**215**
10.	**भारतीय संगीत** • भारतीय संगीत के घटक	**228**

	• भारतीय संगीत का वर्गीकरण • शास्त्रीय शैली • लोक संगीत • शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण (फ्यूज़न संगीत) • संगीत में आधुनिक विकास • संगीत वाद्ययंत्र	
11.	**नृत्य** • शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियाँ • लोक नृत्य • नृत्य का महत्व	**242**
12.	**भारतीय कठपुतली कला** • धागा कठपुतली • छाया कठपुतलियां • दस्ताना कठपुतली • छड कठपुतली • कठपुतली का प्रचार, संरक्षण और व्यावसायीकरण	**249**
13.	**विज्ञान एवं तकनीक** • वास्तुकला के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी • गणित • रसायन विज्ञान • चिकित्सा • चिकित्सा प्रणाली • खगोल	**252**
14.	**भारत में मार्शल आर्ट** • कलारिपयट्टू • सिलंबम	**257**
15.	**मेले एवं त्यौहार** • महत्वपूर्ण मेले • भारत में फसल उत्सव • भारत में नए साल के त्यौहार • धर्मनिरपेक्ष त्यौहार • उत्तर पूर्व के त्यौहार • राष्ट्रीय त्यौहार	**259**
16.	**संस्थाएं** • UNESCO • भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) • अखिल भारतीय रेडियो • नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय • भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार • भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद • कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट (INTACH) • राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय • ललित कला अकादमी • साहित्य अकादमी (राष्ट्रीय पत्रों की अकादमी) • संगीत नाटक अकादमी	**264**

	• सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र	
17.	**पुरस्कार और सम्मान** • भारत रत्न • पद्म पुरस्कार • साहित्य अकादमी पुरस्कार • राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार • अन्य साहित्यिक पुरस्कार	**269**
18.	**महत्वपूर्ण व्यक्तित्व**	**273**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

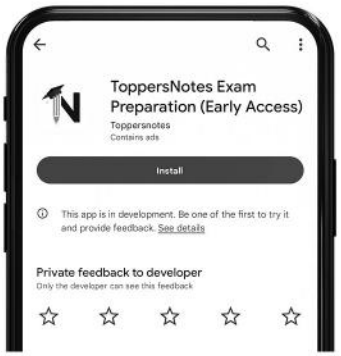

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

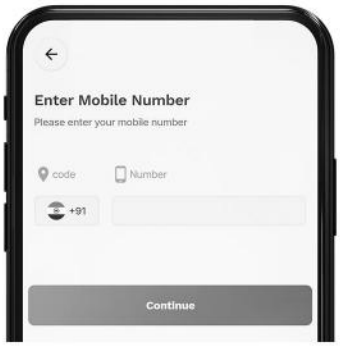

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

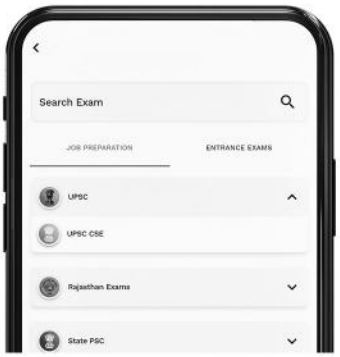

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

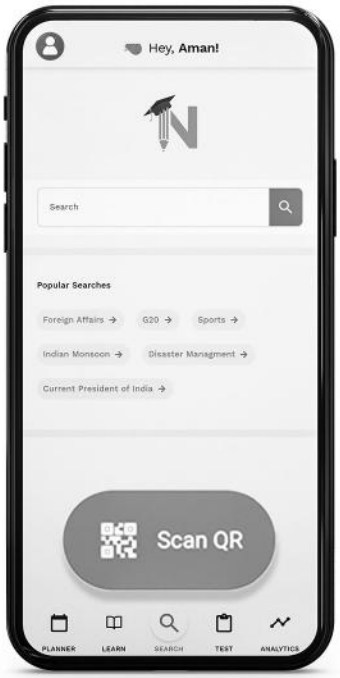

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

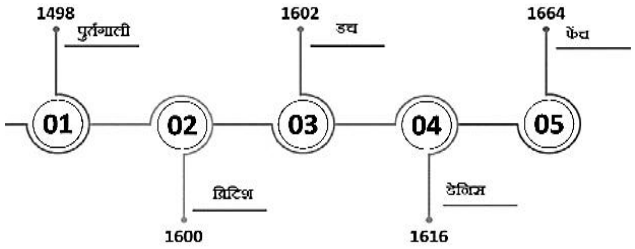

यूरोपियों के भारत आगमन को प्रोत्साहित करने वाले कारक

- **उष्ण कटिबन्धीय वस्तुओं** जैसे-मसाले,रेशम, कीमती पत्थर, चीनी मिट्टी के बरतन आदि की **यूरोप में भारी माँग**
- 1453 ई. में **कुस्तुनतुनिया (तुर्की)पर उस्मानिया तुर्कों का कब्जा** जिससे यूरोपियों का एशियाई व्यापार बाधित हुआ तथा नये व्यापार मार्गों की आवश्यकता उत्पन्न हुई
- **पुनर्जागरण एवं वैज्ञानिक क्रान्ति** के फलस्वरूप यूरोप में समुद्री कम्पास, जहाज की चाल मापने वाला उपकरण, एस्ट्रोलैब (अक्षांश -देशान्तरमापक), त्रिकोणपाल, तोपों एवं बन्दूकों काअविष्कार हुआ। इससे समुद्री यात्राएँ काफी सुरक्षित हो गयी।
- **भारत की अपार संपदा:** मार्को पोलो और कुछ अन्य स्रोतों से यूरोपीय लोगों को भारत की अपार संपत्ति के बारे में पता चला।
- **युरोप में तीव्र औद्योगीकरण** तथा बाजार के विस्तार की खोज आकांक्षा
- तत्कालीन भारत में **कमज़ोर मुग़ल सत्ता** तथा नवीन क्षेत्रीय राज्यों का उदय

भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग के खोज के कारण-

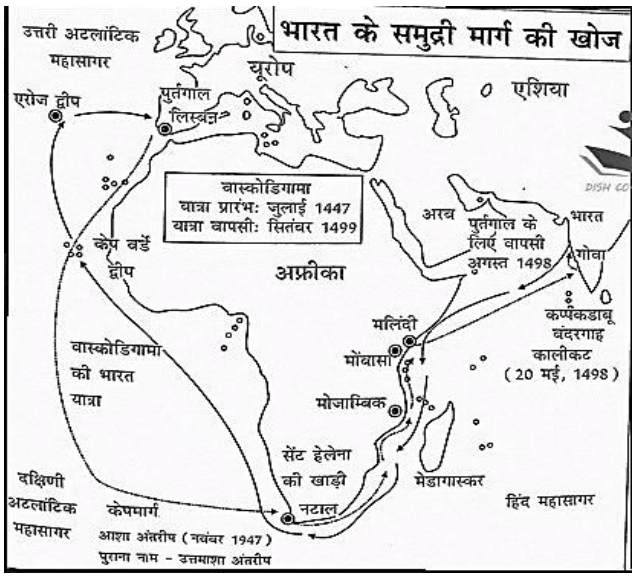

विदेशी शक्तियाँ

1. पुर्तगाली

- जहाजरानी निर्माण एवं नौ परिवहन में प्रगति
- भारत में व्यापार करके अधिक धन कमाने की लालसा
- यूरोप एवं एशिया के व्यापार पर वेनिस एवं जेनेवा के व्यापारियों का अधिकार
- एशिया का अधिकांश व्यापार अरबवासियों तथा यूरोपीय व्यापार इटली वालों के हाथो में था इस व्यापार चक्र को तोड़ने के लिए नए व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकता थी
- **यूरोपीय शासकों** जैसे स्पेन की महारानी ईशाबेला तथा पुर्तगाल के राजकुमार प्रिंस हेनरी आदि द्वारा **समुद्री खोजो को प्रोत्साहन**।
- **साहसी नाविकों का योगदान**: बार्थोलोमियो डियास (पुर्तगाली नाविक) ने 1487 ई. में उत्तम आशा अन्तरीप **'Cape of Good Hope'** की खोज की। 1492 ई. में स्पेनवासी कोलम्बस अमेरिका तथा 1498 ई. में पुर्तगाली नाविक **वास्कोडिगामा** भारत पंहुचा।

<u>पुर्तगालियों के प्रारम्भिक अभियान</u>

वास्कोडिगामा	• कैप ऑफ़ द गुड होप होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मुनीक की सहायता से कालीकट बंदरगाह पर कप्पकडाबू नामक स्थान पर 17 मई 1498 को पंहुचा। • कालीकट के राजा जमोरिन से व्यापर करने की अनुमति प्राप्त की • कन्नूर में, उन्होंने एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया
पेड्रो अल्वारेज़ कैबरेल	• 1500 में कालीकट में भारत में पहला यूरोपीय कारखाना स्थापित किया • पुर्तगालियों पर अरब हमले का सफलतापूर्वक जवाब दिया • कालीकट पर बमबारी की और कोचीन और कन्नूर के शासकों के साथ लाभकारी संधियाँ कीं

फ्रांसिस्को डी अल्मीडा (1505-1509)	• यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर था । • 1505 में, फ्रांसिस्को डी अल्मेडा ने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। • उसने अंजदिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनवाए। . • इसने ब्लू वाटर पॉलिसी तथा कार्टेज प्रणाली जारी की
अल्फांसो डी अल्बुर्कक (1509-1515)	• भारत में पुर्तगालियों का वास्तविक संस्थापक • 1510 ई. में बीजापुर के शासक युसुफ आदिल शाह से गोवा छीना • पुर्तगालियों को भारत में बसने तथा भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया • पहला गवर्नर था जिसने अपने क्षेत्राधिकार में सती प्रथा पर रोक लगाई। • पुर्तगाली सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की • विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय से इसके अच्छे सम्बन्ध थे । • अधिकार का क्रम ○ गोवा 1510 ○ मलक्का 1511 ○ हारमुज 1515 • इसने गोवा को राजनितिक एवं सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभारा
नीनो-डी-कुन्हा	• गोवा को राजधानी बनाया • अंग्रेजो के मुकाबले नौसैनिक क्षमता में पिछड जाना । • धार्मिक असहिष्णुता की नीति अपनाना • भारतीय स्त्रियों से विवाह एवं धर्मान्तरण • व्यापारिक प्रशासन में अकुशलता • रिश्वतखोरी एवं प्रशासनिक नियुक्तियों में भ्रष्टाचार • डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती
नोट 1503 ई. में कोचीन (कोल्लकी स्थापना की जिसे **एस्तादो दा इण्डिया** कहा गया । कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी एक गवर्नर होता था। इसे कम्पनी के हित में व्यापार, संधि, युद्ध विस्तार के अधिकार दिये गये ।	

ब्लू वाटर पॉलिसी -

- हिन्द महासागर क्षेत्र में पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए अल्मीडा की सामुद्रिक नीति को ब्लू वाटर पॉलिसी के नाम से जाना जाता है

कार्टेज़ प्रणाली-

- 16वीं शताब्दी में हिंद महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी नौसैनिक व्यापार लाइसेंस।
- इसी प्रकार की ब्रिटिश व्यवस्था = 20वीं सदी में नौसैनिक प्रणाली।

<u>भारत में पुर्तगाली विस्तार</u>

- मुंबई से दमन और दीव और फिर गुजरात तक गोवा के तट के आसपास के क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया
- सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में पूर्वी तट पर सैन्य चौकियों और बस्तियों की स्थापना की।
- 1579 के लगभग शाही फरमान ने उन्हें व्यापारिक गतिविधियों के लिए बंगाल में सतगाँव के पास बसा।

<u>पुर्तगालियों का महत्व</u>

सैन्य:

- बंदूकों के उपयोग में सैन्य शक्ति का विकास हुआ
- फील्ड गन के मुगल उपयोग और 'रकाब के तोपखाने' में योगदान दिया।
- स्पेनिश मॉडल पर पैदल सेना के ड्रिलिंग समूहों की प्रणाली का विकास किया ।

नौसेना तकनीक

- मल्टी-डेक वाले भारी जहाजों का निर्माण किया गया था इससे उन्हें भारी हथियार ले जाने की सुविधा मिली।
- शाही शस्त्रागार और डॉकयार्ड का निर्माण

सांस्कृतिक कार्य

- सिल्वरस्मिथ और सुनार की कला गोवा में फली-फूली, फिलाग्री वर्कऔर धातु के काम में गहनों का केंद्र बन गया।
- पुर्तगालियों द्वारा चर्चों के आंतरिक भाग में लकड़ी का काम, मूर्तिकला और चित्रित छतें निर्मित की गयी।

2. डच

<u>डच कम्पनी का ढ़ांचा एवं भारत आगमन</u>

- **कॉर्नेलिस हाउटमेन-** 1596 में भारत आने वाला पहला डच व्यक्ति
- 1602 ई. में भारत से व्यापार करने के लिए हॉलैण्ड की संसद द्वारा एक कम्पनी का गठन - "यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैंड" मूल नाम - VOC (vereenigde Oost Indische Compagnie) वेरिंग्देओस्त इंडिस
- डच कम्पनी एक अर्धसरकारी कम्पनी थी जो एक निदेशक मंडल द्वारा चलाई जाती थी । इसमें कुल 17 व्यक्ति शामिल थे जिन्हें **Gentlemen** 17 कहा जाता था ।
- **कम्पनी के दो मुख्यालय थे** - एम्सटर्डम (नीदरलैंण्ड), बटाविया (इण्डोनेशिया)

- भारत में डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में मसूलीपत्तनम (आंध्र प्रदेश) में स्थापित हुई ।
- बंगाल में डचों ने प्रथम फैक्ट्री की स्थापना पीपली में की
- डचों ने भारत में मुख्यतः पूर्वी तट पर अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की जो निम्न हैं-

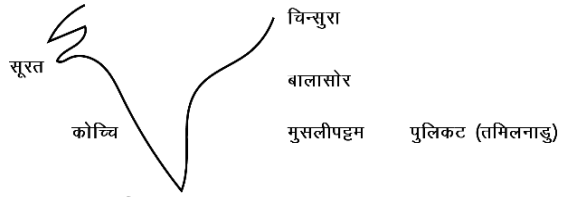

<u>डचों द्वारा स्थापित कारखाने</u>

- प्रथम - मसूलीपत्तनम
- द्वितीय - पत्तोपोली (निज़ामपट्नम)
- तृतीय- पुलीकट 1610
- अन्य कारखाने – सूरत (1616), विमलीपत्तनम, कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), कोचीन (1663), कासिम बाजार, बालासोर, नागापत्तनम (1658)

मुख्यालय

- पुलीकट को डचों ने व्यापारिक केंद्र एवं मुख्यालय बनाया
- 1690 में पुलीकट के स्थान पर नागपट्टनम को मुख्यालय बनाया

प्रमुख किला या फोर्ट

- चिनसुरा में गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ईसवी में हुई
- कोच्चि में फोर्ट विलियम की स्थापना 1663 ईसवी में हुई

नोट

- डचों ने मलक्का या मसाला द्वीप जिसे इंडोनेशिया कहा जाता है इसको पुर्तगालियों से जीता एवं श्रीलंका को भी जीता
- डचों ने जकार्ता को जीतकर नए नगर बटाविया की स्थापना की
- मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने 3.5 प्रतिशत वार्षिक चुंगी पर बंगाल ,बिहार और ओडिसा में व्यापार का एकाधिकार डचों को प्रदान किया
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता या कार्टल पर आधारित थी
- डच मूल रूप से काली मिर्च एवं अन्य मसालों के व्यापार में ही रूचि रखते थे ये मसाले मूलतः इंडोनेशिया में अधिक मिलते थे इसलिए वह डच कम्पनी का प्रमुख केंद्र बन गया
- डचों ने भारत में मसालों के स्थान पर भारतीय कपड़ो के व्यापार को अधिक महत्व दिया
- भारत में डचों के आने से सूती वस्त्र उद्योग का विकास हुआ एवं भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है

<u>भारत में डचों के अधीन व्यापार</u>

- **नील उत्पादक प्रमुख क्षेत्र :** यमुना घाटी और मध्य भारत,
- **कपड़ा और रेशम**: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल,
- **साल्टपीटर:** बिहार
- **अफीम और चावल**: गंगा घाटी।
- काली मिर्च और मसालों का एकाधिकार व्यापार।

आयात-निर्यात

- डच सोना-चाँदी, पारा, ऊन तथा काँच की वस्तुएँ भारत से ले जाते थे ।
- वे भारत से सूती एवं रेशमी वस्त्र, धागा, नील, अफीम, मसाले, चीनी, धातु की बनी वस्तुएँ, शोरा आदि निर्यात करते थे ।

<u>डचों के पतन कारण</u>

- अंग्रेजों से प्रतिद्वंदिता
- डच कंपनी का नियंत्रण सीधे डच सरकार के हाथ में था इसलिए कंपनी अपनी इच्छा अनुसार विस्तार नहीं कर सकती थी
- अंग्रेजों की नौसैनिक शक्ति डचों की तुलना में अधिक मजबूत थी
- डचों की भारत से अधिक रूचि इंडोनेशिया एवं मसाला द्वीपों में थी
- कंपनी में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अयोग्य प्रशासक
- 1759 ई. में बेदरा (बंगाल) के युद्ध में अंग्रेजो ने डचों को बुरी तरह पराजित किया जिससे डचों की शक्ति भारत में समाप्त हो गयी। बाद में इन्होंने अपनी अधिकांश फैक्ट्रियाँ अंग्रेजो को बेच दी ।
- कोलाचेल की लड़ाई (1741) डच और त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा की लड़ाई ने मालाबार क्षेत्र में डच सत्ता का पूर्ण सफाया कर दिया।

<u>महत्व</u>

- **भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है**

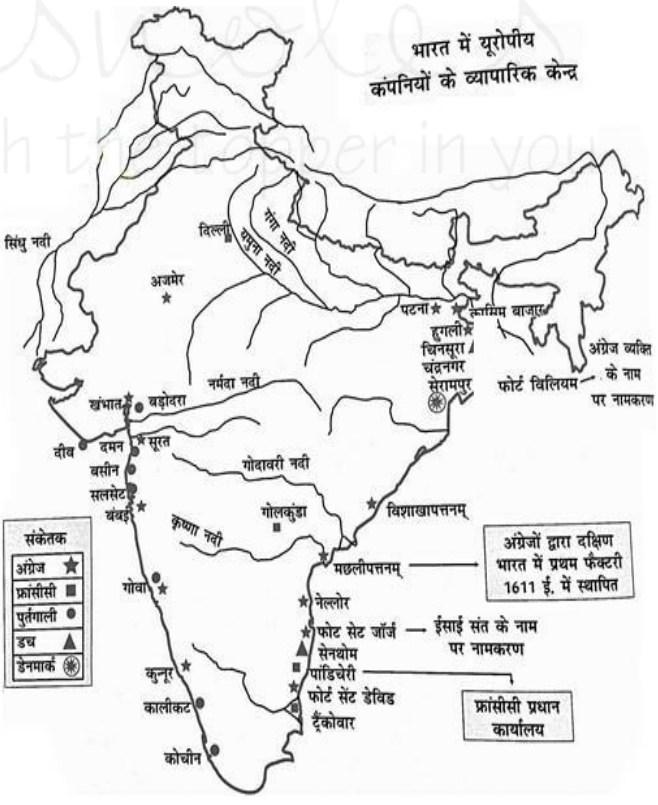

3. ब्रिटिश/अंग्रेज

ईस्ट इण्डिया कंपनी का गठन एवं ढाँचा:

- 1599 ईसवी में जॉन मिलडेन हॉल ब्रिटिश यात्री थल मार्ग से भारत आया
- 1599 में इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर नामक एक व्यापारिक दल ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अथवा दी गवर्नर एंड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज की स्थापना की जो बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी कहलाई ।
- 31 दिसम्बर1600 को महारानी एलिजाबेथ -1 प्रथम ने एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्षो के लिए पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने का एकाधिकार पत्र प्रदान किया और आगे जाकर 1609 में ब्रिटिश सम्राट जेम्स-प्रथम ने कंपनी को अनिश्चित काल के लिए व्यापारिक एकाधिकार प्रदान किया
- कंपनी का प्रारंभिक उद्देश्य भू-भाग नहीं बल्कि व्याkiपार करना था
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की प्रथम समुद्री यात्रा 1601 में जावा, सुमात्रा एवं मलक्का के लिए हुई

ढ़ाँचा

- एक निजी कम्पनी
- 24 सदस्यीय बार्ड ऑफ डायरेक्टर्स द्वारा संचालित जिसका सर्वोच्च अधिकारी गवर्नर था ।
- गवर्नर को युद्ध, संधि, विस्तार आदि करने का अधिकार।

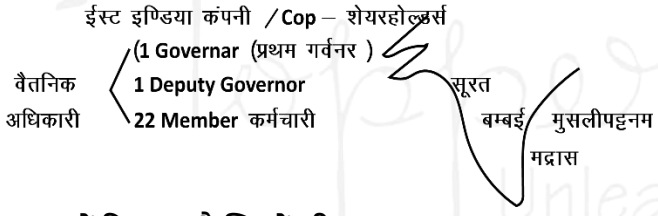

भारत में विस्तार/ फैक्ट्रियों की स्थापना

1609	• **हैक्टर** नामक पहला अंग्रेजी जहाज हॉकिन्स के नेतृत्व में भारत आया • कैप्टन हॉकिन्स **सूरत** में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहाँगीर के दरबार में पहुंचे, लेकिन सफल नहीं हुए • पुर्तगालियों के विरोध का सामना करना पड़ा
1611	• मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और बाद में 1616 में एक कारखाना स्थापित किया।
1612	• कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के पास समुद्र में पुर्तगालियों को हराया; • 1613 में थॉमस एल्डवर्थ के तहत सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए जहांगीर से अनुमति प्राप्त हुई।
1615	• जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत सर थॉमस रो, जहांगीर के दरबार में आए, फरवरी 1619 तक वहां रहे।
1632	• गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'गोल्डन फरमान' प्राप्त किया
1662	• जब चार्ल्स ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से शादी की, तो पुर्तगाल के राजा द्वारा बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में उपहार में दिया गया था
1687	• पश्चिमी प्रेसीडेंसी की सीट सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित कर दी गई

दक्षिण भारत

- **दक्षिण भारत की प्रथम व्यापारिक कोठी** - 1611 में **मछली पट्टनम**। इसके बाद मद्रास में व्यापारिक कोठी की स्थापना की

पूर्वी भारत

- **पूर्वी भारत का प्रथम कारखाना - 1633 में उड़ीसा के बालासोर में**
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अनेक फैक्ट्रियों की स्थापना की जो निम्न हैं –
  - हरिहरपुर (बंगाल), बालासोर (उडीसा), पटना, हुगल, कासिम बाजार (बंगाल)

मद्रास

- **फ्रांसिस डे ने 1639 में चंद्रगिरी के राजा** से मद्रास को पट्टे पर लिया जहां बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** कोठी का निर्माण किया गया

गोलकुंडा

- **गोलकुंडा के सुल्तान** के द्वारा 1632 में **"सुनहरा फरमान"** के माध्यम से गोलकुंडा राज्य में स्वतंत्रता पूर्वक व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गयी
- ईस्ट इण्डिया कंपनी की प्रथम फैक्ट्री (भारत में प्रथम) गोलकुण्डा राज्य (मुसलीपट्टनम) में स्थापित हुई ।

मुंबई

- **1661** में ब्रिटेन के **राजा चार्ल्स द्वितीय** ने पुर्तगाली राजकुमारी से विवाह किया जिसमे दहेज़ के रूप में ब्रिटेन के राजा को मुंबई टापू मिल गया। चार्ल्स ने इसे 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया
- 1669 और 1677 के बीच कंपनी के **गवर्नर जेराल्ड आंगियर ने आधुनिक मुंबई नगर की स्थापना की** और बाद में ईस्ट इण्डिया कंपनी ने ब्रिटिश सरकार से बम्बई को प्राप्त किया

मुग़ल तथा अंग्रेज

- 1691 में औरंगजेब ने एक निश्चित राशि के बदले कंपनी को बंगाल में चुंगी रहित व्यापार की अनुमति दी।
- **शाही फरमान - मुग़ल सम्राट फर्रुखशियर** की बीमारी का इलाज कंपनी के एक डॉक्टर **विलियम हैमिल्टन** के

द्वारा सफलता पूर्वक किया गया जिससे बादशाह ने खुश होकर एक **फरमान** जारी कर दिया जिसमे एक निश्चित **वार्षिक कर 3000 रुपये** चुकाकर निशुल्क व्यापर करने एवं मुंबई में कंपनी ढाले गए सिक्के को संपूर्ण मुग़ल राज्य में चलाने की आज्ञा मिल गयी। अब उन्हें वही कर देने पड़ेगे जो भारतीयों को देने पड़ते है**।**

- ब्रिटिश इतिहासकार और्म्स ने इसको **कंपनी का अधिकार पत्र या मैग्नाकार्टा** कहा**।**
- बंगाल के नबाव मुर्शीद कुली खां ने फर्रुखशियर द्वारा दिए गए फरमान के बंगाल में स्वतंत्र प्रयोग को नियंत्रित करने का प्रयास किया
- मराठा सेना नायक **कान्होजी आगरिया** ने पश्चमी तट पर अंग्रेजों की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया।

बंगाल में विस्तार

- बंगाल में कारखाने**: हुगली (1651), कासिमबाजार, पटना** और **राजमहल।**
- **सुतानती,कालिकाता और गोविंदपुर** तीनो गांव को मिलाकर **जॉब चार्नोक** ने कलकत्ता शहर की नीव रखी और कंपनी ने यही पर **फोर्ट विलियम किले** की स्थापना की और **चार्ल्स आयर को प्रथम प्रेसीडेंट** नियुक्त किया गया ।
- कलकत्ता को अंग्रेजों ने 1700 में पहला प्रेसीडेंट नगर घोषित किया। 1774 से 1911 तक कलकत्ता ब्रिटिश भारत की राजधानी बना रहा
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।

4. फ्रांसीसी

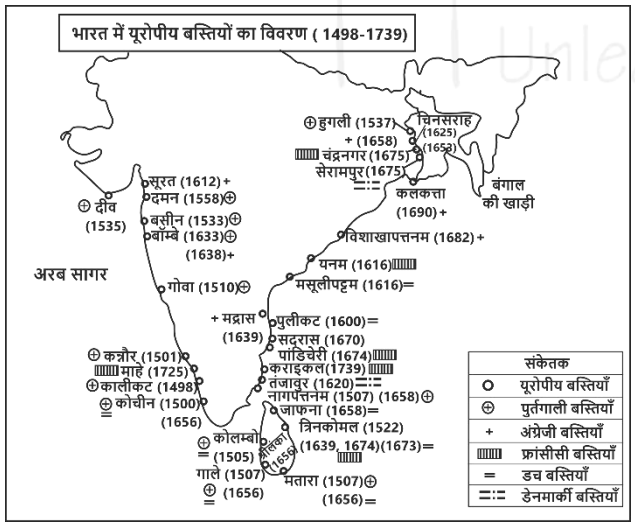

<u>फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी</u>

- भारत में आने वाली अंतिम यूरोपीय शक्ति
- फ्रांस के सम्राट **लुई 14वे** के मंत्री कॉल्बर्ट ने **1664** में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी। जिसे **'The compaginie des Indes Orientales'** कहा गया।
- इसे सरकारी व्यापारिक कंपनी भी कहा जाता था क्योकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी तथा सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी
- प्रथम फ़्रांसिसी फैक्ट्री **- सूरत में 1668** में **फ्रांसिस केरॉन** द्वारा
- **1669** में **मसूलीपट्टनम** में दूसरी फ्रेंच फैक्ट्री की स्थापना की
- **'पांडिचेरी' की नींव** -1673 में कंपनी के निदेशक **फ्रेंको मार्टिन तथा लेस्पिने** ने **वलिकोण्डपुरम के सूबेदार शेरखान लोदी** से कुछ गॉव प्राप्त कियेजिसे कालान्तर में **पांडिचेरी** कहा गया
- **1673** में बंगाल के **नबाब शाइस्ता खान** ने फ़्रांसिसीयो को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की प्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गयी ।
- पांडिचेरी को पूर्व में फ्रांसीसी बस्तियों का **मुख्यालय** बनाया गया और मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी मामलों का महानिदेशक नियुक्त किया गया।
- 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया सितंबर 1697 में संपन्न हुई रिसविक की संधि से पांडिचेरी फ्रेंच को वापस मिला
- पांडिचेरी के कारखाने में ही **मार्टिन** ने **फोर्ट लुई** का निर्माण कराया**।**
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मारीशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराईकल पर अधिकार कर लिया गया ।
- महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र: माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार
- 1742 ई. के पश्चात व्यापारिक लाभ कमाने के साथ साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वकांक्षाए भी जाग्रत हो गई। परिणामस्वरुप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को **'कर्नाटक युद्ध'** के नाम से जानते है।

<u>ब्रिटिश फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता</u>

- भारत में एंग्लो-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता इंग्लैंड और फ्रांस की पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता, जो उत्तराधिकार के ऑस्ट्रियाई युद्ध से शुरू होकर सप्तवर्षीय युद्ध के साथ समाप्त होती है।
- 1740 में, दक्षिण भारत में राजनीतिक स्थिति अनिश्चित और भ्रमित थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ़जाह बूढ़े थे और पूरी तरह से पश्चिम में मराठों से लड़ने में लगे हुए थे।अत: एंग्लो फ्रेंच प्रतिद्वंद्विता की परिणीति कर्नाटक युद्धों के रूप में हुई

<u>फ्रांसीसियों की पराजय के कारण</u>

- फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः सरकारी कंपनी होने के कारण निर्णय लेने मे विलंब
- अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव
- नौसैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
- ब्रिटिशकंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ।

महत्व

- राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

डेनिश का भारत में आगमन

- **डेनमार्क** की ईस्ट इंडिया कंपनी की स्था0पना **1616** में की गई थी |
- ये भी व्यापार के उद्देश्य से यह भी भारत में आये
- पहली फैक्ट्री - त्रावणकोर (तंजोर ,तमिलनाडु) 1620 में
- दूसरी फैक्ट्री - सीरमपुर (बंगाल) 1676 में
- 1745 में अपनी सभी फैक्ट्री अंग्रेजों को बेच दी एवं भारत से चले गए |

कर्नाटक युद्ध

- कोरोमंडल समुद्र तट पर स्थित क्षेत्र जिसे कर्नाटक या कर्णाटक कहा जाता था। परंतु अधिकार को लेकर इन दोनों कंपनियों में लगभग बीस वर्ष तक संघर्ष हुआ।
- कोरोमंडल समुद्रतट पर स्थित किलाबंद मद्रास और पांडिचेरी क्रमशः अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण बस्तियाँ थी। तत्कालीन कर्नाटक दक्कन के सूबेदार के नियंत्रण में था, जिसकी राजधानी आरकाट थी।

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

- **कारण** -आस्ट्रिया के उतराधिकार युद्ध का विस्तार।
- तात्कालिक कारण - अंग्रेज कैप्टन बर्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहांजों पर अधिकार कर लेना। बदलें में मारीशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बुर्डोने के सहयोग से डूप्ले ने मद्रास के गवर्नर मोर्स को आत्म समर्पण के लिए मजबूर कर दिया।
- **नेतृत्व** - अंग्रेजों का नेतृत्व बर्नेट तथा फ्रांसीसियों का डूप्ले कर रहे थे।
- **परिणाम** - कर्नाटक के नवाब की सहायता से युद्ध में फ्रांसीसी विजयी हुए । इस युद्ध में नौसैनिक शक्ति की महत्ता स्थापित हुई।
- **संधि**- 1748 ई. में यूरोप में एक्स-ला-शापेल नामक संधि के सम्पन्न होने पर भारत में भी इन दोनों कंपनियों के बीच संघर्ष समाप्त हो गया।

सेंटथोमे का युद्ध (1748 ई.) यह युद्ध अडयार नदी के तट पर फ्रांसीसियों (डूप्ले) तथा कर्नाटक के नबाव (अनवरुद्दीन) के बीच । डूप्ले की विजय।

- **युद्ध का कारण** - डूप्ले द्वारा नवाब से किये गये वादे से पीछे हटना
- महफूज खां के नेतृत्व में दस हजार सिपाहियों की एक सेना का फ्रांसीसियों पर आक्रमण, कैप्टन पैराडाइज के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने सेंटथोमे के युद्ध में नवाब को पराजित किया।
- जून,1748 ई. में अंग्रेज रियर-एडमिरल बोस्काबेन के नेतृत्व में एक जहांजी बेडे ने पांडिचेरी को घेरा,परंतु सफलता नहीं मिली।

Note: यह प्रथम युद्ध था जिसमें किसी यूरोपीय शक्ति ने आधुनिक काल में किसी भारतीय शासक को हराया था ।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54ई.)

कारण:

1. हैदराबाद तथा कर्नाटक राज्य में उत्तराधिकार का मुद्दा ।
   हैदराबाद - हैदराबाद में उत्तराधिकार को लेकर निजाम आसफ़जाह के पुत्र -नासिर जंग और भतीजे मुजफ़्फ़रजंग (आसफजहा का पौत्र) के तथा कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन तथा उसके बहनोई चंदा साहिब के बीच विवाद। इसमें अंग्रेज तथा फ्रांसीसी भी कूद पड़े । फलत: दो गुट बन गये।डूप्ले ने चंदा साहिब तथा मुजफ्फर जंग को तथा अंग्रेजों ने अनवरुद्दीन और नासिरजंग को समर्थन प्रदान किया।

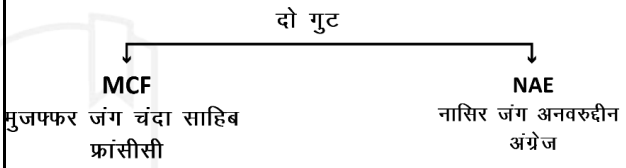

2. अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी महत्त्वाकांक्षा/प्रतिस्पर्द्धा

परिणाम: पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया ।

अम्बर का युद्ध (1749 ई.) -

- **1749 में** फ्रेंच सेना की सहायता से एक युद्ध में **चंदासाहब ने अंबर में अनवरुद्दीन को पराजित कर मार** डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया तथा चंदा साहिब कर्नाटक के अगले नवाब बने। अनवरुद्दीन का पुत्र **मुहम्मद अली** युद्ध में बचकर भाग गया और उसने **त्रिचनापल्ली** में शरण ली।
- लेकिन मुजफ्फर जंग दक्कन की सूबेदारी हेतु अपने भाई नासिर जंग से पराजित हुआ।
- 1750 में नासिर जंग भी फ्रेंच सेना से संघर्ष करता हुआ मारा गया **और मुजफ्फर जंग हैदराबाद** का नबाब बना दिया गया।
- इस समय दक्षिण भारत में फ्रांसीसियों का प्रभाव चरम पर था।
- इसी बीच **राबर्ट क्लाइव** ने 1751ई. में 500 सिपाहियों के साथ धारवार पर धावा बोलकर कब्जा कर लिया।
- फ्रांसिसीयो ने चांदा साहब की सेना की साथ मिलकर दुर्ग को घेर लिया अंग्रेजो की तरफ से क्लाइव इस घेरे को तोड़ने में असफल रहा और क्लाइव ने अपनी सूझ बूझ से कर्नाटक की राजधानी अर्काट पर अधिकार कर लिया
- **1752** में **स्ट्रिगर लॉरेंस** के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने त्रिचनापल्ली को बचा लिया और फ्रांसिसी सेना ने अंग्रेजो के

सामने आत्मसमर्पण कर दिया और चांदा साहब की हत्या कर दी गई।

- डुप्ले को वापस बुला लिया गया तथा 1754 में **गोडेहू** अगला फ्रांसिसी गवर्नर बनकर भारत आया। पाण्डिचेरी की संधि (1755 ई.) द्वारा युद्ध समाप्त हो गया।
- डूप्ले के बारे में **जे.और.मैरियत** ने कहा कि **'डूप्ले ने भारत की कुंजी मद्रास में तलाश कर भयानक भूल की, क्लाइव ने इसे बंगाल में खोज लिया।**

<u>तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)</u>

- **कारण:** यूरोप में सप्तवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ होना। तात्कालिक कारण - क्लाइव और वाट्सन द्वारा बंगाल स्थित चंद्रनगर पर अधिकार करना।
- **नेतृत्व:** फ्रांसीसी (काउण्ट लाली) एवं अंग्रेज (आयरकूट)
- **परिणाम:-** 22 जनवरी 1760 ई. के वांडीवाश के युद्ध में आयरकूट ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह पराजित किया अंग्रजो ने भारत में अन्य यूरोपीय शक्तियों को समाप्त कर सबसे बड़ी शक्ति बनकर सामने आये अब उनका मुकाबला केवल भारतीय राजाओ से था।
- **संधि -** 1763 ई. में पेरिस की संधि द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।

<u>फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की जीत के कारण</u>

- **दोनों कम्पनियों के ढाँचे में अन्तर -** सरकार एवं निजी
- **यूरोप में फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों की राजनीतिक स्थिति एवं स्थायित्व काफी मजबूत था** (पार्लियामेण्ट (अंग्रेज) एवं निरंकुश राजशाही (फ्रांस)
- ब्रिटेन में कृषि एवं **औद्योगिक क्रान्ति** के परिणामस्वरूप फ्रांस की अपेक्षा आर्थिक समृद्वि अधिक बेहतर
- हिन्द महासागर में अंग्रेजी नौसेना का काफी दबदबा। उन्होनें प्रारम्भ से ही मद्रास, बम्बई, कलकत्ता के नौसैनिक ठिकानों का विकास किया।
- फ्रांसीसियों के मुकाबले अंग्रेजों ने प्रारम्भ से ही **व्यापार-वाणिज्य, राजस्व प्राप्ति** पर विशेष ध्यान दिया। अंग्रेजों (क्लाइव) की बंगाल को आधार बनाकर विस्तार की रणनीति

<u>अन्य यूरोपीय शक्ति के खिलाफ अंग्रेजी की सफलता के कारण</u>

- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी अन्य कंपनियों के विपरीत एक निजी कंपनी थी।
- ब्रिटेन के पास विशाल एवं अत्याधुनिक नौसेना होना।
- ब्रिटेन में कृषि एवं औद्योगिक क्रांति के कारण आर्थिक सम्पन्नता
- ब्रिटेन के पास एक अनुशासित और तकनिकी रूप से विकसित सेना का होना
- फ्रांस, डच आदि के विपरीत ब्रिटेन में एक स्थायी शासन की उपस्थिति
- अन्य कंपनियों की रूचि ईसाई धर्म के प्रसार में अधिक थी, जबकि अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी धर्म से ज्यादा व्यापार विस्तार में रूचि रखते थे।
- ऋण बाजार का उपयोग- **दुनिया के पहला केंद्रीय बैंक, बैंक ऑफ इंग्लैंड** की स्थापना सरकारी ऋण को मुद्रा बाजारों में बेचने के लिए की गई थी।

कला एवं संस्कृति

1 CHAPTER संस्कृति

- किसी देश के **सांस्कृतिक मूल्य** एवं **परम्पराएँ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष** रूप से उस देश की **भौगोलिक** एवं **जलवायविक दशाओं** से **प्रभावित** होती है क्योंकि इस पृष्ठभूमि में ही उस देश का **सामाजिक**, **आर्थिक**, **राजनीतिक**, **धार्मिक** एवं **सांस्कृतिक ढाँचा** निर्मित होता है।
- इसके अतिरिक्त उस देश के निवासियों का **चिंतन**, **रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, नृत्य, त्योहार** एवं **परम्पराओं** से भी **प्रभावित** होता है।
- औद्योगिक क्रांति के बाद विकसित **भौतिक समृद्धि** से उत्पन्न **वैज्ञानिक** एवं **तकनीकि प्रगति** और **सूचना** एंव **संचार** ने सभी देशों के **सांस्कृतिक मूल्य को गहरे रूप से प्रभावित** किया है।

अर्थ

- **संस्कृति -** किसी समाज में निहित **उच्चतम मूल्य** की **चेतना**, जिसके अनुसार वह समाज अपने जीवन को ढालता है।
  - संस्कृत भाषा की **धातु 'कृ'** (करना) से बना है, जिसका **अर्थ** है **परिष्कृत स्थिति।**
  - अर्थात् जब **प्रकृत/ कच्चे संसाधन को परिष्कृत** किया जाता है तो वह **संस्कृति** हिस्सा बन जाता है।
  - अंग्रेजी शब्द **'कल्चर'** लैटिन भाषा के **'कल्ट या कल्टस'** से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित या **परिष्कृत करना।**
  - संक्षेप में किसी वस्तु को इस हद तक **संस्कारित और परिष्कृत करना** कि इसका **अंतिम उत्पाद** हमारी **प्रशंसा** और **सम्मान** प्राप्त कर सके।

संस्कृति की अवधारणा

- संस्कृति **जीवन की विधि** है, जो **भोजन** हम खाते हैं, जो **कपड़े** हम पहनते हैं, जो **भाषा** हम बोलते हैं और जिस **भगवान** की हम पूजा करते हैं, ये सभी **संस्कृति** के **पक्ष** है।
- अतः एक **सामाजिक वर्ग** के सदस्य के रूप में **मानवों** की सभी उपलब्धियाँ **संस्कृति** कही जा सकती है, **उदाहरण** कला, संगीत, साहित्य, शिल्पकला, धर्म, दर्शन आदि।
- इस प्रकार संस्कृति, **मानव जनित पर्यावरण** से संबंध रखती है जिसमें सभी **भौतिक और अभौतिक उत्पाद एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी** को **स्थानांतरित** किये जाते हैं।
- संस्कृति, मानव के **शारीरिक** तथा **मानसिक संस्कारों का सूचक** है अर्थात् संस्कृति मानव समाज के संस्कारों का **परिष्कार** और **परिमार्जन** है जो कि एक **सतत प्रक्रिया** है।
- दूसरे शब्दों में मनुष्य के लिए जो **वांछनीय** अर्थात् मंगलमय है वह **संस्कृति का अंग** है।
- संस्कृति का एक अर्थ **अत:करण की शुद्धि** और **सहदयता** भी है

संस्कृति की विशेषताएँ

- संस्कृति हमारी **प्रकृति की अभिव्यक्ति** है।
- यह हमारे **साहित्य** में, **धार्मिक** कार्यों में, **मनोरंजन** एवं आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में देखी जा सकती है।
- **भौतिक** एवं **अभौतिक** रूप में संस्कृति **मानव जनित पर्यावरण** से **संबंध** रखती है।
- भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे **जीवन के भौतिक पक्षों से जुड़ाव** रखती है, जैसे हमारी वेश-भूषा, खान-पान व घरेलू वस्तुएँ आदि।
- **अभौतिक-संस्कृति** का संबंध **विचारों**, **आदर्शो**, **भावनाओं** और **विश्वासों** से है।
- **संस्कृति** एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में **बदलती रहती** है।
  - इसका विकास एक **स्थानीय**, **क्षेत्रीय** अथवा **राष्ट्रीय** संदर्भ में विद्यमान **ऐतिहासिक प्रक्रिया** पर आधारित होता है।
    - **उदाहरण -** देश के विभिन्न हिस्सों में अभिवादन की विधियों में, हमारे वस्त्रों में, खाने की आदतों में, सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों और मान्यताओं में भिन्नता है।
- संस्कृति **आंतरिक अनुभूति** से **सम्बद्ध** है जिसमें **मन** और **हदय** की **पवित्रता निहित** है
- इसमें **कला**, **विज्ञान**, **संगीत**, **नृत्य** और **मानव जीवन** की **उच्चतर उपलब्धियाँ** सम्मिलित है, जिन्हें **सांस्कृतिक गतिविधियाँ** कहा जाता है।

संस्कृति और विरासत

- पूर्ववर्तियों से हमें जो **संस्कृति विरासत में** मिली है, उसे सांस्कृतिक विरासत या राष्ट्रीय विरासत, मानव विरासत आदि कहा जाता है।
- **संस्कृति बदल सकती** है, लेकिन **विरासत नहीं।**

संस्कृति का महत्व

- सत्य के **तीन शाश्वत मूल्य, सत्य** (दर्शन और धर्म), **सौंदर्य** (कला और वास्तुकला) और **अच्छाई** (नैतिकता और प्रेम, सहिष्णुता के मूल्य) संस्कृति से जुड़े हुए हैं

- **सामूहिक ज्ञान** वह है जो हमें **मानव बनाता** है और इसे **अंतर** और **अंतः पीढ़ियों** (संस्कृति) के बीच **साझा** किया जा रहा है

संस्कृतिओं के अध्ययन का महत्व

1. **व्यक्ति की दृष्टि से महत्व -**
   - किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण **खान-पान, व्यवहार, वेश-भूषा, सोच एवं आदतों** द्वारा किया जाता है
   - संस्क्रति व्यक्ति का **नियमन एवं समाजीकरण का कार्य** करती हैं।
   - अत: व्यक्तियों को **समग्रता में जानने के लिए संस्कृति का अध्ययन अपरिहार्य** होता है।
2. **सामाजिक दृष्टि से महत्व**
   - संस्कृति का निर्माण मुख्यतः **सामाजिक प्रयासों की देन** है।
   - संस्कृतियाँ **समाजों** को **जोड़ने का कार्य** करती हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए अनेक तीज-त्यौहारों, मेलों, उत्सवों आदि विकास हुआ है
   - प्रत्येक समाज अपनी **आवश्यकताओं** के **अनुरूप** संस्कृति के अनेक **तत्वों** जैसे - कला, धर्म, दर्शन विज्ञान, आचार-व्यवहार, परंपरा आदि **का निर्माण** करता है।
   - अत: **समाज** को **समझने** के लिए भी **संस्कृति** को **समझना** अत्यंत **महत्त्वपूर्ण** है।
3. **राष्ट्रीय दृष्टि से महत्व**
   - संस्कृतियाँ **राष्ट्रीय पहचान** का **निर्धारण** करती हैं क्योंकि इसका **निर्माण** राष्ट्र के तहत आने वाले **निवासियों के सामूहिक योगदान** से होता है।
   - संस्कृतियाँ विभिन्न **राष्ट्रों को जोडने का भी कार्य** करता है।
   - भारत सहित विश्व में अनेक ऐसे देश है जिनकी संस्कृति का विस्तार राष्ट्रीय सीमा के बाहर तक है। अतः राष्ट्रीय दृष्टि से भी इसका **महत्व अत्यधिक** है।

संस्कृति (Culture) एवं सभ्यता (Civilisation)

- संस्कृति एवं सभ्यता **एक दूसरे से सम्बंधित** अवधारणाएं है।
- इन दोनों, शब्दों के अर्थ एवं व्यवहार को लेकर **विद्वानों के बीच आम राय नहीं** है।
- **संस्कृति**, मानव की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा अर्जित **एक मानवीय पूँजी** हैं जिसके तहत धर्म, दर्शन, चिंतन , विचार कला, विज्ञान, भाषा साहित्य, आचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, जीवन-शैली आदि आते हैं।
  - संस्कृतियों की जड़ में **मूल्य एवं आदर्श निहित** होते हैं।
- **सभ्यता** संस्कृति के **मानकीकरण** (Standardization) की एक विशेषता है।
  - **सांस्कृतिक यात्रा** के द्वारा **मानव** द्वारा जब एक **उन्नत तकनीकी स्तर** तथा **उच्च आर्थिक समृद्धि** को प्राप्त कर लिया जाता है तो उसे सभ्यता कहा आता है।
  - सभ्यता के अवस्था में **विचलन** (deviation) हो सकता है।
  - यही कारण है **सभ्यता का पतन** हो सकता है, **संस्कृतियों का नहीं**
    - **जैसे** - हडप्पा एवं मेसोपोटामिया की सभ्यताएँ आदि।

संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

सभ्यता में मनुष्य का भौतिक पक्ष प्रधान होता है	संस्कृति में आचार, विचार की प्रधानता होती हैं
सभ्यता का विकास अल्पकाल में भी संभव हैं	संस्कृति का निर्माण लम्बी परम्परा के कारण होता हैं
सभ्यता की आधारशिला संस्कृति हैं पर सभ्यता में सुधार संभव हैं	संस्कृति की जड़ें गहरी व अपरिवर्तनशील होती हैं
सभ्यता शरीर और ब्राह्म व्यवहार को दर्शाती हैं	संस्कृति आत्मा और आंतरिक व्यवहार को दर्शाती हैं

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

- निरंतरता और परिवर्तन
- धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण
- सार्वभौमिकता (शांति, गुटनिरपेक्षता, विश्व बंधुत्व)
- विविधता और एकता
  - दुनिया के सभी प्रमुख धर्म यहां हैं
  - भूगोल और जलवायु
  - विदेशी प्रभाव (ईरानी, यूनानी, अरब, ब्रिटिश)
  - अलग-अलग जातियां
  - क्षेत्रीय परस्पर मेलजोल
  - विचारों को आत्मसात करने की उल्लेखनीय क्षमता
  - व्यापार, तीर्थयात्रा, सैन्य अभियान
  - भौतिकवादी और आध्यात्मवादी

2 CHAPTER वास्तुकला/स्थापत्यकला

वास्तुकला कला और विज्ञान है जो **भवन** और **गैर-भवन संरचनाओं** के **डिजाइन** से **संबंधित** है। भारत में वास्तुकला **सिंधु घाटी सभ्यता से शुरू** हुई और मंदिरों, स्तूपों, शैल्कर्तित गुफाओं, महलों, किलों आदि जैसी विभिन्न **संरचनाओं का निर्माण** हुआ।

पाषाण कालीन/स्थापत्य कला

- भारत में **पाषाणकालीन मानवों द्वारा निर्मित** वास्तुकला का **उदाहरण नहीं** मिलता।

महापाषाण काल

- महापाषाण काल के **लोगों द्वारा** उनके **कब्रिस्तानों** को **पत्थर** से **सजाने** का उदाहरण मिलता है।
- दक्षिण भारत में इस प्रकार **शवों** को **दफनाने** की **परम्परा लौह युग** के साथ आरंभ हुई।
- महापाषाण कालीन **दफन करने के उदाहरण** बड़ी संख्या में निम्न स्थानों जैसे **महाराष्ट्र** (नागपुर के पास) **कर्नाटक** (मास्की), **आंध्र प्रदेश** (नागार्जुनकोंडा), **तमिलनाडु** (आदिचन्नालुर) तथा **केरल** में पाये गये है।

दक्षिण भारत में महापाषाण/वृहत्पाषाण संस्कृति

- एक **पूर्ण लोहयुगीन संस्कृति।**
- औजारों के लिए **पत्थरों का कम प्रयोग।**
- दक्षिण भारत में लौह युग के बारे में **अधिकांश जानकारी महापाषाणकालीन कब्रों की खुदाई से प्राप्त** होती है।
- सभी **महापाषाण स्थलों में लोहे की वस्तुएं** मिलीं - विदर्भ क्षेत्र (मध्य भारत) में नागपुर के पास जूनापानी से लेकर सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु में आदिचनल्लूर तक हैं।

मेगालिथ के प्रकार

- दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों पर किए गए अन्वेषणों और उत्खनन के आधार पर -
  - **रॉक कट गुफाएं/ शैलकर्तित गुफाएं-**
    - **यह पश्चिमी तट के दक्षिणी भाग** में पाए जाने वाले नरम लेटराइट पर उकेरी गई हैं।
    - **पश्चिमी तट** क्षेत्र में और **केरल** के कोचीन और मालाबार क्षेत्रों (विशुद्ध रूप से महापाषाण) में पाए जाते हैं।
    - **दक्षिण भारत का पूर्वी तट**- मद्रास के पास मामल्लापुरम (महाबलीपुरम)।
    - **दक्कन और पश्चिमी भारत** - एलीफेंटा, अजंता, एलोरा, कार्ले, भाजा आदि (अन्य उद्देश्यों के लिए)।
  - **हुड स्टोन्स और हैट स्टोन्स / कैप स्टोन्स / टॉपिकल/ फणाकृति पाषाण** -
    - **शैलकर्तित गुफाओं** से सम्बन्ध लेकिन सरल।
    - **गुंबदाकार लेटराइट ब्लॉक** से बना होता है जो एक प्राकृतिक चट्टान में काटे गए भूमिगत गोलाकार गड्ढे को कवर करता है और इसमें सीढ़ी भी होती हैं।
    - फणाकृति पाषाण के ऊपर एक **हैट स्टोन** या टॉपपिक्कल-**एक समोत्तल स्लैब** होता है जो तीन या चार चतुर्भुज क्लिनोस्टेटिक शिलाखण्ड पर टिका होता है।
    - एक **भूमिगत गड्ढे** को कवर करता है **जिसमें अंत्येष्टि कलश** और **अन्य कब्र** सामग्री होती हैं।
    - **कोचीन** और **मालाबार** क्षेत्रों में पाया जाता है।
  - **मेनहिर -**
    - **अखंड स्तंभ** जमीन में लंबवत लगाए जाते हैं।
    - **ऊंचाई** में **छोटा या विशाल** हो सकते है (16 फीट - 3 फीट)।
    - **समाधि स्थल** पर **या उसके निकट स्थापित**।
    - **प्राचीन तमिल साहित्य** में **नादुकल / पांडुक्कल** या **पांडिल** के रूप में उल्लेख किया गया है।
  - **संरेखण-**
    - **मेनहिर के साथ** घनिष्ठ रूप से **जुड़ा** हुआ है।
    - **चतुर्दिश** में **उन्मुख खड़े पत्थरों की एक श्रृंखला** से मिलकर बनता है।
    - **केरल** के **कोमल परथल** और **कर्नाटक** के **गुलबर्ग**, **रायचूर**, **नल्गोंडा** और **महबूबनगर** जिलों में **पाए जाते हैं**।
  - **अवेन्यू/द्वार-**
    - **संरेखण की दो या दो से अधिक समानांतर पंक्तियों** से मिलकर बनता है।
  - **डोलमेनॉइड ताबूत/सिस्ट-**
    - **कई ऊर्ध्वस्थिति पाषाणों से बने वर्गाकार या आयताकार बॉक्स** जैसी कब्रों से मिलकर बनता है।
    - **सजाया** और अलंकृत किया **जा सकता है।**
    - **तमिल नाडु** में प्रमुख रूप से पाया जाता है।
  - **शिला-वृत्त**
    - पूरे दक्षिण भारत में पाए जाने वाले सबसे लोकप्रिय प्रकार के महापाषाण स्मारक।
    - शिलाखंडों से घिरे पत्थर के मलबे के ढेर से मिलकर बनता है।

- **3 उपप्रकार:**
  - ✓ **गर्त शवाधान**
    - ☞ प्राकृतिक मिट्टी में खोदे गए गहरे गड्ढों से मिलकर बनता है।
    - ☞ गोलाकार, चौकोर या तिरछा।
    - ☞ कंकाल के अवशेष और कब्र के फर्नीचर को फर्श पर रखा गया है
    - ☞ चेंगलपट्टु (तमिलनाडु), चित्रदुर्ग और गुलबर्गा (कर्नाटक) जिलों में पाए जाते हैं।
  - ✓ **सरकोफेगी शवाधान**
    - ☞ टेराकोटा/मृणमूर्ति से बना ताबूत।
    - ☞ गर्त शवाधान की तुलना में अधिक व्यापक।
    - ☞ यह गर्त शवाधान के समान है, सिवाय इसके कि कंकाल के अवशेष और कब्र के फर्नीचर के प्राथमिक निक्षेप को एक आयताकार टेराकोटा सरकोफैगस में रखा गया है।
    - ☞ तमिलनाडु के दक्षिण आरकोट, चेंगलपट्टु और उत्तरी आरकोट जिलों और कर्नाटक के कोलार जिले, आंध्र प्रदेश के दक्षिणी जिलों में पाए जाते हैं।
  - ✓ **पाइरीफॉर्म या कलश शवाधान**
    - ☞ कलश, जिसमें अंत्येष्टि की जाती है, मिट्टी में खोदे गए गड्ढों में जमा किए जाते हैं।
    - ☞ गड्ढों को ऊपर तक मिट्टी से भर दिया जाता है और एक आच्छादन शिला/ कैप्स्टोन से ढक दिया जाता है।
    - ☞ केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में पाया जाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता कालीन स्थापत्य कला

- **पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार** पर, इस **संस्कृति** के फलने-फूलने की **चरम अवस्था 2100 ई.पू. से 1750 ई.पू.** के बीच अनुमानित है।
- मकानों के निर्माण में सामग्री की **उत्कृष्टता** तथा **दुर्ग**, **सभागारों**, अनाज के **गोदामों**, **कार्यशालाओं**, **छात्रावासों**, **बाजारों** आदि की **मौजूदगी** तथा **आधुनिक जल निकास प्रणाली** वाले **भव्य नगरों** के समान वैज्ञानिक **ले-आउट** देखकर यह **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है कि उस काल की **संस्कृति** काफी **समृद्ध** थी।
- **हडप्पा** और **मोहनजोदड़ों** नामक **दोनों राजधानियाँ** उत्तम **नगरविन्यास** का **उदाहरण** हैं। वहाँ के **वास्तु विद्या** आचार्यों ने **दुर्ग** के रूप में उनका **विधान** किया।
- उनके **पुरविन्यास** में **परिखा**, **प्राकार**, **वप्र**, **द्वार**, **अट्टालक**, **महापथ**, **प्रसाद**, **कोष्ठागार**, **सभा**, **वीथी**, **जलाशय** आदि वास्तु के अनेक स्थल प्राप्त हुए हैं।
- कोट के भीतर **नगर चौड़े महापथों से विभक्त** था जो चतुष्पथों के रूप में एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनसे **कम चौड़ी रथ्याओं और वीथियों में बँट** जाते थे और समस्त पुर को कई **चौक** या **मुहल्लों** में **बाँटते** थे।
- पुरनिर्माण के आरम्भ में **वास्तु-विद्याचार्यों** ने उसका जैसा **विन्यास** किया था वह लगभग उसी रूप में एक **सहस्त्र वर्षों के अन्त तक** बना रहा।

रास्ते

- नगर का **मुख्य राजमार्ग 33 फीट चौड़ा** है।
- उस पर कई **गाड़ियाँ एक साथ** चल सकती हैं।
- **कम चौड़ी सड़के** 12 फीट से 9 फीट तक हैं। इसके बाद **4 फुट तक चौड़ी गलियाँ** भी हैं।
- **सड़कों** पर **ईट बिछाकर** उन्हें **पक्की** करने का **रिवाज** नहीं था।
- केवल **बीच** में बहने वाली **नालियों** को **ईंटों** से **पक्की बनाकर** ईटों से ही **ढंकते** थे।

घर

घर प्रायः **एक सीध में** और **गलियों** की **ओर** बनाए जाते थे। उनकी **माप** प्राय: 27 फुट x 29 फुट या बड़ें घरों की इससे दुगुनी होती थी। उनमें कई **कमरे**, **रसोईघर**, **स्नानघर** और बीच में **आँगन** होता था और वे **दुखण्डे** बनाए जाते थे।

- कमरों में **फर्श पक्के** न थे, **केवल मिट्टी** कूटकर कच्चे रखे जाते थे।
- **स्नान** की **कोठरियों** में **पतली ईंटें** लगाकर फर्श में एकदम ऐसी जुड़ाई करते थे कि एक बूंद भी पानी न भरने पाये।
- मोटी दीवारों में **नल लगाकर नहाने धोने** का **पानी** नीचे उतार कर **सड़क की ओर** नालियों में बहा दिया जाता था। इससे होने वाली **स्वच्छता** जोकि **हड़प्पा संस्कृति** की **विशेषता** थी।
- प्रायः हर अच्छे घर में **मीठे पानी से भरा हुआ कुआँ** था।

कुएँ

- कुएँ के मुँह पर कुछ **ऊँची मुड़ेर** रहती थी जिसकी ऊपरी कोर पर रस्सी आने-जाने के निशान अभी तक बने हैं।
- वास्तुकाला की दृष्टि से **मोहनजोदड़ो** तथा **हड़प्पा** के **बड़े अन्नागार** भी **अद्भुद** है। पहले इसे **स्नानागार** का **ही एक भाग** माना जाता था।
- किन्तु **उत्खनन** के **पश्चात** यह ज्ञात हुआ है कि ये एक **विशाल अन्नागार** के **अवशेष** है।
- स्नानागार के निकट **पश्चिम** में **विद्यमान पक्की ईंटों** के विशाल चबूतरे पर **मोहनजोदड़ो** का **अन्नागार** निर्मित है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की **लम्बाई 150 फी**ट तथा उत्तर से दक्षिण की **चौड़ाई 75 फीट** है।

मंदिर वास्तुकला

- भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास **गुप्त युग के दौरान चौथी** से **पांचवीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ।
- पहले **हिंदू मंदिर शैल्कर्तित गुफाओं** से बनाए गए थे, जो **बौद्ध संरचनाओं** जैसे स्तूपों से **प्रभावित** थे।
- इस अवधि के दौरान, बड़े पैमाने पर **मुक्त खड़े मंदिरों का निर्माण** किया गया।
- **दशावतार** मंदिर (देवगढ़, झांसी) और **ईंट मंदिर** (भितरगांव, कानपुर) इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों के कुछ उदाहरण हैं।
- भारत में हिंदू मंदिरों के **स्थापत्य सिद्धांतों** का **वर्णन शिल्प शास्त्र में** किया गया है जिसमें तीन मुख्य प्रकार के मंदिर वास्तुकला का उल्लेख है - **नागर** शैली, **द्रविड़** शैली और **वेसर** या मिश्रित **शैली।**

हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना

- **गर्भगृह** - **मंदिर का हृदयस्थान**- मंदिर के अंदर मुख्य देवता के लिए बनाया गया है। पहले के दिनों में, इसका एक ही प्रवेश द्वार था जिसमे बाद में कई कक्षों विकसित हुए।
- **मंडप**- यह **मंदिर का प्रवेश द्वार** है जो बहुत बड़ा होता है जिसमें **बड़ी संख्या** में **उपासकों** के लिए **जगह** शामिल है। कुछ मंदिरों में **अर्धमंडप** (मंदिर के बाहर और एक मंडप के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र बनाने वाला प्रवेश द्वार) और **महामंडप** (मंदिर में मुख्य सभा हॉल जहां भक्त समारोहों और सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं) नामक **विभिन्न आकारों** में कई **मंडप** होते हैं। ये **कुछ** ही **मंदिरों** में **मौजूद** हैं।
- **शिखर/विमान** - यह एक **पर्वत जैसा शिखर** है, जो **उत्तर भारत** में एक **घुमावदार शिखर** और **दक्षिण भारत** में एक **पिरामिडनुमा मीनार** (जिसे विमान कहा जाता है) के **आकार** में है।
- **वाहन**- यह मंदिर के **मुख्य देवता का वाहन** है जिसे **गर्भगृह से पहले** रखा जाता है।
- **अमलक**- पत्थर की एक **डिस्क जैसी** संरचना जो **उत्तर भारतीय शैली** के **शिखर** के **शीर्ष पर** स्थित है।
- **कलश**- **चौड़े मुंह वाला बर्तन** या सजावटी बर्तन-डिजाइन **उत्तर भारतीय मंदिरों में** शिखर को सजाते हैं।
- **अंतराल**- गर्भगृह और मंदिर के मुख्य हॉल (मंडप) के बीच एक **संक्रमण क्षेत्र**
- **जगती**- **बैठने** और **प्रार्थना** करने के लिए एक **ऊंचा मंच** और **उत्तर भारतीय मंदिरों** में **आम** है।

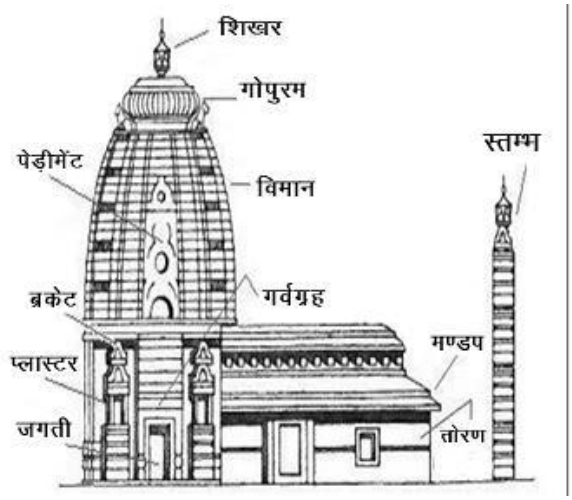

मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग

- एक योजना की **ज्यामिति एक रेखा से शुरू** होती है जो फिर एक **कोण** बनाती है, फिर **त्रिभुज**, **वर्ग**, **वृत्त** और इसी तरह अंततः **जटिल रूपों** में **परिणत** होती है।
- इस जटिलता का परिणाम **स्व-समानता** होता है ।
- हिंदू मंदिर की योजना **वास्तुपुरुषमंडल** से संबंधित **पुराणों** में **वर्णित सिद्धांतों** का कड़ाई से **पालन** करती है।
- मुख्य रूप से **दो प्रकार के मंडल** होते हैं, एक **चौंसठ वर्गों वाला** होता है और दूसरा **इक्यासी वर्गों वाला** होता है जहाँ प्रत्येक वर्ग **एक देवता को समर्पित** होता है।
- **मुखमंडप**, **अर्धमंडप** और अंत में **महा मंडप** से शुरू होकर, **मूलप्रसाद** आता है, जो **गर्भगृह** को **घेरता** है।
- भग्न का भी **दो आयामों** और **तीन आयामों** दोनों में **मंदिर की ऊंचाई पर** बहुत **प्रभाव** पड़ता है।
- **फ्रैक्टल स्व-समान पसलियों** को बनाकर **अमलाका भाग** में **काम** करता है।
- **भग्न सिद्धांत** "सब के बीच एक, सब एक है" की **हिंदू दार्शनिक अवधारणा** का पूरी तरह से समर्थन करता है। यह "**अराजकता में व्यवस्था**" लाता है और इस प्रकार "**जटिलता में सुंदरता**" लाता है।
  गुजरात के **मोढेरा** में **सूर्य कुंड** भारतीय मंदिरों में **भग्न ज्यामिति** के उपयोग का एक **उत्कृष्ट** उदाहरण है।

मंदिर वास्तुकला के चरण

पहला चरण-

- **चपटी छत** वाला चौकोर आकार का मंदिर
- **उथले स्तंभ** पर निर्मित
- संरचना को **कम ऊंचाई के मंच** पर बनाया गया था
- **गर्भगृह** मंदिर के **केंद्र में** स्थित होता था
- मंदिर का **एक** ही **प्रवेश द्वार**
- **उदाहरण**- एमपी के एरण में विष्णु वराह मंदिर, कंकली मंदिर, तिगवा और मंदिर नं। सांची में 17.

दूसरा चरण-

- **पूर्व चरण** की ही **विशेषताएं**
- **मंच / वेदी** और अधिक **ऊंची**
- **उदाहरण-** नचना कुठार का पार्वती मंदिर

तीसरा चरण-

- सपाट छतों के स्थान पर **शिखर** (घुमावदार टॉवर) **का उद्भव** हुआ।
- "**नागर शैली**" **मंदिर निर्माण** को मंदिर निर्माण के तीसरे चरण की **सफलता** कहा जाता है।
- **पंचायतन शैली** का आरम्भ
  उदहारण: देवगढ का दशावतार मंदिर**,** ऐहोल का दुर्गा मंदिर

चौथा चरण-

- **तीसरे चरण** की सभी **विशेषताओं** को इस चरण में **आगे बढ़ाया** गया।
- केवल **मुख्य मंदिर** आकार में अधिक **आयताकार** हो गया।
- **उदाहरण**: महाराष्ट्र तेर मंदिर

पांचवा चरण

- बाहर की ओर **उथले आयात्कार किनारों वाले वृत्ताकार मंदिरों** का निर्माण
- **पहले** के **चरणों** की सभी **विशेषताएं** जारी रही
  उदाहरण:राजगीर का मनियार मठ

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

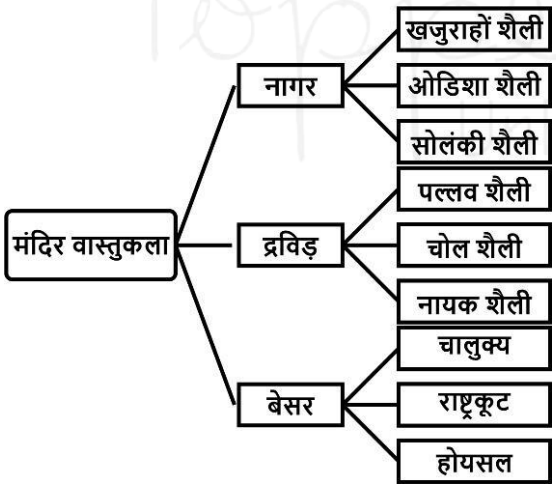

उदभव एवं विकास (100 BC - 1700 / 1800 AD)

नागर शैली	मोर्योत्तर काल (100 ईसा पूर्व - 300 ईसवी) → गुप्तकाल (319-550 ईसवी) → पूर्वमध्यकाल (700-1200 ईसवी)
द्रविण शैली	पल्लव (7 -9वी सदी) → चोल (9-13वी सदी) → विजयनगर (14-16 वी सदी) → नायक (14-18वी सदी)
बेसर शैली	पशिमी चालुक्य (7 -9 वी सदी) → राष्ट्रकट (10-12वी सदी) → होयसल (13-14 सदी)

1. मंदिरों की नागर शैली

- उत्तर भारत में **हिमालय से विध्य के मध्य** नागर मंदिर मिलते है
- नागर मंदिरों का **निर्माण ऊचे चबूतरे** या **अधिष्ठान** या **जगती** पर किया जाता है।
- इन मंदिरो का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है
- **गर्भगृह** के उपर बनी **आकृति शिखर रेखा** या **आर्य शिखर** कहलाती है।
- शिखर को गर्भगृह से उपर की तरफ **वक्राकार** ढंग से बनाया गया है। तथा इसकी **ऊचाई बढ़ती** जाती है।
- इसके लिए **गर्भगृह से चारो तरफ प्रक्षेपण आकृति** निकाले जाते है।

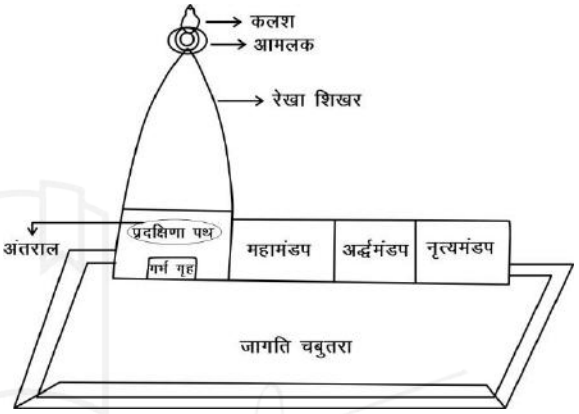

- शिखर के **सर्वोच्च भाग** पर **आमलक** (चक्राकार संस्चना या गतिका परिचायक) एव **कलश** बना होता है।
- गर्भगृह के **चारों तरफ अंतराल** होता है जिसका प्रयोग **प्रदक्षिणा पथ** के रूप में किया जाता है।
- बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने अन्य **सहायक संरचनाएँ** जैसे- महामण्डप, मण्डप, मधमप, नृत्यगंडप आदि वने होते है।
- कुछ स्थानों पर नागर मंदिर **पंचायतन शैली में बने** होते है जिसके तहत **केद्र** में एक **विशाल मंदिर** तथा **चारो कोनों** पर **सहायक देवी देवताओ के मंदिर** बनाए जाते हैं।
- नागर मंदिरों के **बाहरी भागों** में **आले** (ताखा) **काटकर** अनेक प्रकार की **मूर्तियों** से इन्हें **सजाया** जाता है। इन मूर्तियों में अनेक **देवी देवताओं**, लोकविषयों से संबंधित जैसे **नाग अप्सरा**, **मिथुन**, नृत्य संगीत आदि आम स्त्री पुरुष की **मूर्तिया** बनी होती है। जिन्हें **उत्तर प्रदेश** के देवगढ़, **कंडरिया महादेव**, **खजुराहों**, **भुवनेश्वर** आदि मंदिरों में देखा जा सकता है।
- **शिखरों की आकृति के आधार पर** नागर मंदिरों को वर्गीकृत किया जा सकता है-
  - **लैटिना/ रेखाप्रसाद**
    - इसका वर्गाकार आधार होता है।
    - यह **सबसे सरल और सबसे सामान्य प्रकार** है।
    - **ज्यादातर गर्भगृह के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।

- **फमसाना**
  - इसका एक **व्यापक आधार** होता है।
  - लैटिना की तुलना में **ऊंचाई में कम ।**
  - ज्यादातर **मंडप के लिए उपयोग** किया जाता है।
- **वल्लभी**
  - इसका एक **आयताकार आधार** है
  - छत जो एक **गुंबददार प्रकोष्ट** का निर्माण करती है।
  - **अर्धगोलाकार छतो** के रूप में जाना जाता है।

- **कुछ प्रमुख उदारण**
  - दशावतार मंदिर - देवगढ़ (UP)- विष्णु
  - कंदरिया महादेव - खजुराहो (MP)- शिव
  - लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों 'विष्णु
  - लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर -शिव
  - अरसावली मंदिर – आंद्रप्रदेश - सूर्य

नागर शैली के अंतर्गत 3 उपशैलियाँ:

A. <u>ओडिशा शैली</u>

- मंदिर **शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व** करते हैं।
- ओडिशा में **कलिंग साम्राज्य** के समय में नागर शैली के अन्तर्गत ही ओडिशा मंदिर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसमें अनेक **विशेषताएँ** देखने को मिलती हैं, जैसे-
  - मंदिर की **बाहरी दीवारों** पर **बारीक नक्काशी** की जाती थी जबकि **भीतरी दीवारें बिना** किसी **नक्काशी** के खाली छोड़ दी जाती थीं।
  - **मंदिर की छत को लोहे के गार्डरों से सहारा** दिया जाता था।
  - **शिखर** - **रेखा-देउल** जो क्षैतिज आकार में होने के बाद शीर्ष पर एकदम से अन्दर की तरफ मुड़े थे।
  - ये मंदिर द्रविड़ शैली के समान ही **परकोटे से घिरे** थे।
  - **मंदिर के मंडप** को **जगमोहन** कहा जाता था।

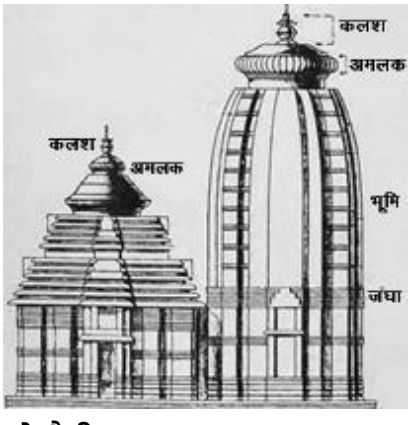

B. <u>खजुराहो शैली</u>

- **मंदिरों** में एक **गर्भगृह**
- एक **छोटा आंतरिक-कक्ष** (अंतराल), एक **अनुप्रस्थ** भाग **(महामण्डप)**
- अतिरिक्त **सभागृह** (अर्ध मंडप)
- एक **मंडप** या बीच का भाग
- एक **बड़ी खिड़कियों** वाला चल मार्ग (**प्रदक्षिणा-पथ**)।
- मंदिरों की **नक्काशी** मुख्य रूप से **हिंदू देवताओं** और **पौराणिक कथाओं** के **संबंध** में है।
- स्थापत्य शैली भी **हिंदू परंपराओं** के **अनुसार** है। इनकी **विभिन्न कारकों** द्वारा **पुष्टि** कि जा सकती है।
- हिंदू मंदिर के निर्माण की एक **प्रमुख विशेषता** यह है कि **मंदिर** का **मुख सूर्योदय** की दिशा की ओर होना चाहिए।
- इसके अलावा, इनकी **नक्काशी** हिंदू धर्म में जीवन के **चार लक्ष्यों** अर्थात, धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष को दर्शाती है।
- **मूर्तियों** और **कामुक चित्रों** का समूह **दैनिक जीवन** के **दृश्यों** को **प्रतिनिधित्व** करता है।

C. <u>सोलंकी शैली</u>

- **गुजरात** और **राजस्थान** में निर्मित
- इसके तहत **हिन्दू मंदिरों** के साथ-साथ **जैन मंदिरों** का भी **निर्माण** हुआ।
- **अर्द्ध-गोलाकार पीठ** और **'मंडोवार' गुजरात उपशैली** की पहचान विशेषता हैं।
- वह **अर्द्ध-गोलाकार संरचना** जिसकी वजह से छत-शिखर अलग-अलग दिखता है, उसे **मंडोवार** कहते हैं।
- **उदाहरण:** माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालिताना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में **संगमरमर** के **दो मंदिर** हैं- **दिलवाड़ा** का **जैन** मंदिर तथा **तेजपाल मंदिर** (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- कुंभरिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** में भी राजस्थान के **मकरान** से **उपलब्ध** काले और सपेद **संगमरमर** का इस्तेमाल किया गया है।
- माउंट आबू के **मंदिरों** का **निर्माण** सोलंकी शासक **भीम सिंह प्रथम** के मंत्री **दंडनायक विमल** ने करवाया था, इसी कारण इसे विमलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर **गुर्जर-प्रतिहारों** की **देन** माना जाता है।

2. मंदिरों की द्रविड शैली

- विकास - **कृष्णा नदी से कन्याकुमारी** के बीच वर्तमान तमिलनाडु, केरल, निचला आंध्र प्रदेश आदि के मध्य हुआ है।

- द्रविड़ मंदिरों मे **ऊचा चबूतरा नहीं** होता है। यह **मंदिर धरातल** के **निचले हिस्से** से बनना **प्रारंभ** होता है।
- द्रविड़ मंदिरों का **गर्भगृह वर्गाकार** एवं इसके उपर का **शिखर पिरामिडाकार** होता है जो तल्ले के ऊपर तल्ला घटते क्रम में मे बना होता है।
- इसके **ऊचे उठते भाग** को **विमान** कहा जाता है, **शिखर** के **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** नामक **संरचना** बनी होती है।
- गर्भगृह के **चारो ओर अन्तराल** बना होता है जितका **प्रयोग दक्षिणा पथ** के लिए किया जाता है।
- **गर्भगृह** के सामने **बहुसंख्यक स्तंभों** पर टिका **महामण्डप** बना होता है। साथ ही **अन्य सहायक रचनाए** जैसे-अधिमंड़प एवं नदीमण्डप आदि बने होते है।
- **द्रविण मंदिर चारदीवारी** के **भीतर** बने होते है**। मंदिर प्रांगण** में **तालाब** बना होता है। प्रांगण के **भीतर सहायक मंदिर** (देवी-देवता एवं राजा रानियों) के भी बने होते है।
- द्रविण मंदिरों का **प्रवेश द्वार** काफी **भव्य** एवं **विशाल** होता है। जिसे **गोपुरम** कहा जाता है।
- मंदिरों के बाहरी भागो पर **मण्डपो** से लेकर **शिखर** तक **देवी-देवताओं की मूर्तियों** एवं **लोक विषयों** से सम्बंधित **मूर्तियों** का **अरभूत शिल्पांकन** किया जाता है। **मंदिर-** वृहदेश्वर एवं मिनाक्षी मंदिर ।

नागर एवं द्रविण शैली के मंदिरों में अन्तर

नागर शैली	द्रविड़ शैली
• **रेखीय शिखर** होता है • शिखर के **सर्वोच्च भाग पर आमलक** तथा **कलश** जैसी संरचना होती है • सामान्यतः **ऊचा चबूतरा** बना होता है। • चारदिवारी तथा प्रांगण के भीतर **तालाब निर्माण आवश्यक नहीं** है। • **भव्य प्रवेश द्वार** सामान्यतः **नही** बने होते है। ○ वास्तुशास्त्र की भाषा में इन्हें **प्रसाद** कहा जाता है।	• **पिरामिडाकार शिखर** होता है • सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका** वनी होती है • **ऊचा चबूतरा आवश्यक नहीं** होता है, मंदिर सामान्यतः धरातल से ही बनने प्रारम्भ हो जाते है। • **चारदिवारी का निर्माण** तथा **प्रांगन में तलाब** यहां की मुख्य विशेषता है • **भव्य प्रवेशद्वार** होते है जिसमे **गोपुरम** यहाँ की विशेष परम्परा है। ○ इन्हें **वास्तुशास्त्र में विमान** कहा जाता है।

A. <u>पल्लवों की मंदिर वास्तुकला</u>

- **मंदिरों के प्रत्यक्ष संरक्षण** की परंपरा पल्लवों के साथ शुरू हुई।
- पल्लव राजा **महेंद्रवर्मन प्रथम** के शासनकाल से, तमिलनाडु में पल्लव कला के **बेहतरीन उदाहरण** जैसे शोर मंदिर और महाबलीपुरम के 7 पैगोडा बनाए गए थे।
- महिषासुरमर्दिनी, गिरि गोवर्धन पैनल, गजलक्ष्मी और अनातसायनम कुछ **शानदार मूर्तियां** हैं जिनका संरक्षण किया गया है।
- पल्लव वास्तुकला **शैलकृत मंदिरों से लेकर शैल निर्मित मंदिरों** तक के संक्रमण को दर्शाती है।

(i) <u>महेंद्र समूह या महेंद्रवर्मन शैली</u>

- यह **सबसे प्रारंभिक** शैली थी जिसे मंडप कहा जाता है
- इसके तहत **पहाडी को सामने की तरफ से काटकर** पिछले भाग में **साधारण कक्ष** (गर्भगृह) एवं **बरामदा** का **निर्माण** किया गया
- **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **मूर्तिया** तया अनेक **स्तम्भ** बनाए गए।
- उसके तहत **कई मंडपों का निर्माण** किया गया जिसमें **त्रिमूर्ति मंडप**, **पंच पांडव मंडप** (पल्लवरम) तथा **महेन्द्र विष्णु मंडप** आदि मुख्य है।

(ii) <u>नरसिंहवर्मन प्रथम / मामल्ल शैली (मण्डप + रथ) / नरसिंह समूह</u>

- यह भी **शैलकृत मंदिरों की शैली** है।
- इसके तहत **मन्डपो के साथ रथों का निर्माण** किया गया।
- **मण्डप**
  - कनेरी मंडप
  - आदिवराह मंडप
  - पंचपांडव मण्डप
- **प्रमुख विशेषताएँ**
  - उस काल में **रथों का निर्माण पहाड़ी को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर** किया गया है।
  - ये **रथों के अनुकरण मे** बने है।
  - इन पर **बोद्ध चैत्यो एवं विहारों का भी प्रभाव** है।
  - सभी रथ **एक समान नहीं** है बल्कि ये कई मंजिलों में बने हुए है
  - रथों के **सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका** बनी होती है।
  - **सभी रथ मंदिर महाबलीपुरम** में बने हैं।
  - इनकी संख्या सात है इन्हें **सप्त पैगोडा** भी कहते है।
    1. युधिष्ठीर रथ (सबसे बड़ा)
    2. भीमरथ
    3. अर्जुन रख
    4. नकुल/ सहदेव रथ
    5. द्रोपती रथ
    6. गणेश रथ
    7. पिंडारी या वलयकुडी रथ
  - रथ केवल स्थापत्य के ही उदारण नहीं है बल्कि ये **शिल्प कला के भी उत्तम प्रदर्शन** है।
  - इनके बाहरी भागों पर **रामायण, महाभारत** तथा **पौराणिक कथाओं** जैसे अर्जुन की तपस्या, शिव की किरात, राम का वनवास आदि का उल्लेख है